



**लक्ष्मी सीड्स**

**अधिक उत्पादन के लिए सुझाव**





लक्ष्मी सीड्स

# हमारी किस्में



# न्यूट्रि ग्रीन

# जलवायु और मिट्टी

इस किस्म को बढ़ने के लिए कम तापमान की ज़रूरत होती है। इसे सभी तरह की मिट्टी में बोया जा सकता है।



# खेत की तैयारी और बुवाई का समय

ध्यान रखें कि ज़मीन समतल और खरपतवार-मुक्त हो। खेत की 3-4 बार जुताई करें और पाटे (लेवलर) की मदद से उसे समतल करें। खेत का समतल होना ज़रूरी है।

**बुवाई का समय** – अक्टूबर से नवंबर।



# बुवाई का तरीका

बुआई के तरीके के बारे में: अगर किसान इस किस्म के बीजों को फ़र्श या तिरपाल पर राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें, उन्हें छांव में सुखाएं और फिर बोएं, तो चारे की ज़्यादा पैदावार मिलेगी। बीजों को अच्छी तरह तैयार, समतल खेत में बोएं और तुरंत सिंचाई करें। इसके अलावा, बीजों को खड़े पानी में भी बिखेरा जा सकता है।



# उर्वरक

खेत तैयार करते समय, प्रति एकड़ 6-8 टन अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट और 125 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट (जिससे 20 किलोग्राम फॉस्फोरस मिलता है) मिट्टी में मिलाएं। अगर गोबर की खाद का इस्तेमाल नहीं किया गया है, तो बुवाई के समय 20 किलोग्राम यूरिया और 30 किलोग्राम फॉस्फोरस अतिरिक्त डालें। हर कटाई के बाद, सिंचाई के साथ 10-15 किलोग्राम यूरिया डालें।



# सिंचाई और खरपतवार नियंत्रण

पहली सिंचाई बुआई के समय करनी चाहिए, दूसरी 4-5 दिन बाद, और उसके बाद 10-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। आप ट्यूबवेल और नहर के पानी के मिश्रण का इस्तेमाल करके सिंचाई कर सकते हैं। बेहतर होगा कि ट्यूबवेल और नहर के पानी से बारी-बारी से सिंचाई करें, बशर्ते ट्यूबवेल के पानी का pH लेवल बहुत खराब न हो। खरपतवार को रोकने के लिए, अक्टूबर के दूसरे हफ्ते में बीज बोएँ, ठंडे मौसम के कारण 'इट-सिट' (It-Sit) जैसे खरपतवार नहीं उगते।



# कटाई

इस किस्म में, बुवाई के 50-55 दिनों बाद पहली कटाई की जा सकती है, और उसके बाद 25-30 दिनों के अंतराल पर 5-6 बार कटाई की जा सकती है।



# टिप्पणी

बरसीम में अक्सर मैंगनीज़ की कमी हो जाती है, जिससे बीच की कुछ पत्तियाँ ग्रे या पीली पड़ जाती हैं। 1 किलोग्राम मैंगनीज़ सल्फ़ेट को 200 लीटर पानी में घोलें और इस घोल का 7-8 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

